अन्नपूर्णा योजना
7 / जन्मदिन / वैवाहिक वर्षगाँठ / पूर्वज-वार्षिकी
आइये! आज के दिन को यादगार बनायें...
प्यार, प्रसन्नता, और प्रसाद बांटकर पुण्य प्राप्त करें।

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

प्रतिष्ठा में, ______________________

प्रकाशन तिथि : 09 जून, 2026
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN/2001/03044 Regd.
Title Code : DELHIN09770

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

जून, 2026 | ज्येष्ठ/आषाढ़ | सं. 2083 | अंक 299 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म
2 सम्पादकीय
3 अम्बर की पाती
4 समाचार दर्शन
5 गुरु घर से पाती
6 धर्मादा
7 समाचार दर्शन
8 समाचार दर्शन

गुरु से ही संस्कार-संस्कृति और
गुरुकृपा से भगवत्प्राप्ति

गुरु मानव देह में अभिव्यक्त परम चेतना का ऐसा ज्योतिपुञ्ज है, जो शिष्य को वास्तविक स्वरूप का ज्ञान करवाता है और उसकी सुप्त शक्तियों को जागृत कर उसे नवजीवन प्रदान करता है। पद्मपुराण में कहा गया है—सूर्य दिन में प्रकाश करता है, चंद्रमा रात्रि में प्रकाशित होता है और दीपक घर में उजाला करता है, लेकिन सद्गुरु अपने शिष्य के हृदय में दिन-रात प्रकाश फैलाते हुए उसके सम्पूर्ण अज्ञानमय अंधकार का नाश कर देता है। गुरु से ही आदर्श जीवन के संस्कार मिलते हैं, गुरु की शिक्षाओं से संस्कृति फलती-फूलती है और संरक्षित होती है और जब गुरु कृपा हो जाती है तो सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति के साथ भगवत्प्राप्ति भी हो जाती है।

बंदऊं गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर॥

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं—मैं गुरु महाराज के चरण कमल की रज (धूलि) को प्रणाम करता हूं, जो अच्छी रुचि और प्रेम को उत्पन्न करने वाली है। 'गुरुपूर्णिमा' 'सद्गुरु' के पूजन का पर्व है। गुरु की पूजा 'गुरु' के अंदर ज्ञान का आदर है, ज्ञान और ब्रह्मज्ञान की पूजा है। जब तक मनुष्य को सत्य के ज्ञान की प्यास रहेगी, तब तक व्यास पुरुषों का, ब्रह्मज्ञानियों का आदर-पूजन होता रहेगा।

गुरु को हमारे धर्मग्रंथों में देवताओं से भी बड़ा कहा गया है, इसलिए उनकी चरण-शरण और प्रवचन, उपदेश, संदेश में अगाध श्रद्धा-निष्ठा रखते हुए उनके कृपापात्र बने रहिए। ऐसे पर्व-त्यौहार और स्थलों में जरूर सम्मिलित होइए और वहां पहुंचिए जहां और जिस अवसर पर सद्गुरु की विशेष कृपाएं बरस रहीं हों। वैसे तो शिष्यों के कल्याण के लिए और धरा पर ज्ञान का आलोक फैलाने के लिए सद्गुरु की हमेशा अनवरत कृपाएं बरसती हैं पर कुछ विशेष पर्वों पर सद्गुरु की कृपा रूपी मेघों से सिर्फ और सिर्फ अमृत के झरने प्रवाहित हुआ करते हैं और ऐसे शुभ अवसर पर जो सद्गुरु के ज्ञानामृत में स्नान-पान कर लेता है वह भाग्यशाली ही नहीं महान सौभाग्यशाली हो जाता है। गुरुपूर्णिमा शिष्यों के लिए ऐसा ही एक महापर्व है जिसमें गुरुदर्शन, पूजन-अर्चन और सद्ज्ञान श्रवण से शिष्य के सौभाग्य के कपाट खुलते हैं और जीवन की उन्नति, उत्थान में बाधा पहुंचाने वाले दुर्भाग्य से मुक्ति मिल जाती है। गुरुपूर्णिमा गुरु के सान्निध्य में आत्मावलोकन, आत्मनिरीक्षण और स्वयं के मूल्यांकन का पावन पर्व है। हम स्वयं को निखारें, खुद को पहचान जाएं, भूलों से सीख लें और जीवन में पूर्णता की ओर बढ़ने के प्रयास में जुट जाएं सच्चे अर्थों में गुरुपूर्णिमा पर्व पर सद्गुरु की यही सच्ची पूजा है, बंदगी है और तहेदिल से कृतज्ञता ज्ञापन है।

> राम कृष्ण से को बड़ा, तिन्हहूं तो गुरु कीन्ह।
> तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन॥
>
> **गुरु ही शिष्य को जागृत करते हैं। इसलिए अवतार लेने पर भगवान श्री राम ने गुरु वशिष्ठ और भगवान श्री कृष्ण ने गुरु संदीपनी की शरण में जाकर स्वयं को जागृत किया।**

इस वर्ष गुरुपूर्णिमा महोत्सव आनन्दधाम आश्रम में ही आयोजित है। भक्ति भी, मंत्र साधना भी, गुरुदर्शन भी, देवदर्शन, यज्ञ आरती, गौपूजन, कल्पवृक्ष वाटिका में मनोरथ सफलता हेतु अनुष्ठान भी, सब प्रकार से कृपा ही कृपा। आने के लिए व्यवस्था कर लीजिए।

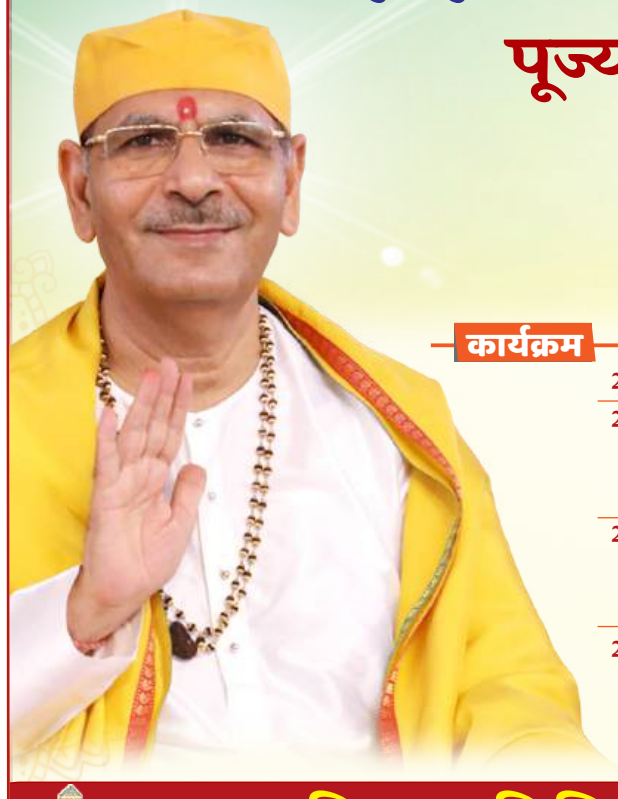

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी के
पावन सान्निध्य में
गुरु पूर्णिमा महोत्सव
25 से 29, जुलाई, 2026

कार्यक्रम

25 जुलाई -	सायं 5 बजे से सत्संग
26 जुलाई -	प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरुमंत्र सिद्धि साधना सायं 5 बजे से सत्संग
27 जुलाई -	प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरुमंत्र सिद्धि साधना सायं 5 बजे से सत्संग
28 जुलाई -	प्रातः 8 बजे से गुरु मंत्रदीक्षा प्रातः 9 बजे से दिव्य शक्तिपात क्रिया सायं 5 बजे से सत्संग

29 जुलाई, 2026
मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव
प्रातः 8 बजे से गुरुदर्शन, पादपूजन एवं विशेष आशीर्वचन

आनन्दधाम आश्रम, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

आयोजकः विश्व जागृति मिशन, भारत
www.vishwajagritimission.org

ऑनलाईन / ऑफलाईन गुरु मंत्र सिद्धि साधना के लिए सम्पर्क करें
(+91) 9312284390, 8826891953, 9589938938

कारवां की दास्तां

जब कोई व्यक्ति जीवन की युद्धभूमि में संकल्पबद्ध होकर अकेले ही सम्पूर्ण विश्व को भारतीय संस्कृति और धर्म अति समर्पण भाव से जागृत करने का प्रण करके धर्म यात्रा में समय के साथ करोड़ों लोगों को जोड़ लेता है तो वह गर्व से, अभिमान रहित होकर कहे कि मैं अकेला ही चला था और कारवां बनता गया, तो यह लोकोक्ति शत् प्रतिशत मेधावी बालक यशपाल पर सत्य सिद्ध होती है जिसने सफलता से हिन्दी संस्कृत में आचार्य तक शिक्षा प्राप्त की, विद्यार्थीकाल में ही वेदों, उपनिषदों, गीता, रामायण, यहां तक कि भारतीय वाङमय के अधिकतर ग्रन्थों का अध्ययन कर के स्वयं को निष्णात कर लिया और अपना सम्पूर्ण जीवन धर्म, संस्कृति, मानव कल्याण, निर्धन सेवा और जन-जन के उद्धार को नि:स्वार्थ भाव से समर्पित कर दिया और वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में परम आराध्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के रूप में जिनकी प्रसिद्धी है। करोड़ों धर्म प्रेमी उन्हें संबुद्ध संत, आत्मीय सखा प्रदर्शक, प्रेरणादूत, प्रबुद्ध धर्म प्रचारक, राष्ट्र प्रेमी जानते और मानते हैं।

गुरुदेव जी ने धर्म प्रचार की यात्रा प्रवचनों से प्रारम्भ की। अर्ध-शताब्दी से अधिक इस यात्रा में देश-विदेश में 8000 से अधिक प्रवचनों के द्वारा करोड़ों लोगों को धर्म अनुयायी बनाया। संस्थाओं का एक विराट रूप खड़ा किया। देश-विदेश में 1991 में स्थापित विश्व जागृति मिशन की सैंकड़ों शखाएं, भव्य मंदिरों व आश्रमों का निर्माण, शिक्षा संस्थाएं, गुरुकुल, अस्पताल, गऊशालाएं, वृद्धाश्रम, योग स्कूल, उपदेशक महाविद्यालय, साधना स्थली, यज्ञशालाएं, ऐसी सैंकड़ों संस्थाओं को स्थापित किया। भारतीय समाज के सभी वर्गों बाल, युवा, नारी, वरिष्ठ नागरिकों के लिए कल्याणकारी योजनाओं के बाद अभियान प्रारम्भ किये।

वर्ष 2025 में प्रयागराज में आयोजित महाकुंभ में गुरुदेव जी ने अगले दस वर्षों में देश में 10 गुरुकुल और 108 संस्कार केन्द्र खोलने का शंखनाद किया। मार्च 2026 तक 38 संस्कार केन्द्र विभिन्न महानगरों में स्थापित किये जा चुके हैं। विदित हो कि संस्कार और संस्कृति का विकास इस देश की आत्मा है। मानव कल्याण का यही एक मात्र रास्ता है। गुरुदेव जी महाराज ने "मैं अकेला ही चला था और कारवां बनता गया" के सत्य को आत्मविश्वास, ईमानदारी, कर्मठता, ईश्वर आस्था जैसे अनेक सद्गुणों का पालन कर उसे सिद्ध कर दिया है।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

सद्गुरुदेव उवाच

जब भी आप कहीं किसी भी ऐसे स्थान पर जाएं, कोई सुंदर नदी का तट हो और लताओं से घिरा हुआ, कोई नकुंज हो या फूलों से भरी हुई कोई बगिया हो तो उस भगवान को प्रणाम करना, मन ही मन कहना कि फूलों में हंस रहे हो, कलियों में खिल रहे हो, हर दिल में बस रहे हो, कोई भी ऐसा स्थान नहीं प्रभु जहां तू नहीं है। बच्चों की किलकारियों में या किसी भोले व्यक्ति की मुस्कान में। किसी भक्त की आंख में और किसी दानी के हाथ में। किसी मंजिल की ओर संन्मार्ग में चलते हुए पथिक के पग में या फिर किसी ज्ञानी के शब्द में या गाते हुए किसी गायक के स्वर में। समस्त साज में और समस्त आवाजों में, एक उसी का रस बहता है, जिसके लिए अनेक-अनेक नाम भाव विभोर होकर हम लोग पुकारते हैं कि तू ही कृष्ण-कन्हैया है, तू ही राम रम्मैया है।' तू ही मेरा शिव है, तू ही मेरा ओंकार है, तू ही तो निरंकार है, तू ही स्वयंभू है कितने नाम हैं तेरे, सच्चिदानन्द स्वरूप सर्वशक्तिमान, शुद्ध-बुद्ध, निरंजन, निर्विकार अनुपम सभी नाम हैं तेरे। तू ही ज्योतिर्मय है, तू ही प्रकाश स्वरूप है, तू ही पथ प्रदर्शक है, तू ही राह दिखाने वाला है, तू ही माता है, तू ही पिता है, तू ही मेरा सखा है, तू ही मेरा धन है, तू ही निर्बल का बल है, तू अनाथों का नाथ है, तू दीनों का दीनानाथ है। किस तरह से तुझे पुकारूं? कौन-कौन से नाम लूं? कैसे-कैसे तुझे रिझाऊं? कैसी-कैसी तेरी प्रार्थना करूं? सर्वत्र तू ही है। सब शब्द तेरे ही हैं, तेरे ही सारे भजन हैं, सारी पुकार तेरे लिए ही है, सब कुछ तेरा ही है, मैं भी तेरा हूं, जग भी तेरा है, हे प्रभु! मुझे स्वीकार कर, अपने चरणों से लगा, कभी भटक जाऊं, खो जाऊं तो फिर भले ही ठोकर लगाकर मुझे अपनी राह पर ले जाना पड़े तो जरूर ले चलना पर दुनिया में भटकने मत देना, मुझे इस दुनिया में खोने मत देना। मैं तेरा होना चाहता हूं, तुझसे मिलना चाहता हूं। जैसे कोई नदी सागर में मिलकर सम्पूर्णता प्राप्त करती है, ऐसे मैं तुझमें मिलकर अपनी रिक्तता को अपने अभाव को दूर कर लेना चाहता हूं। ●

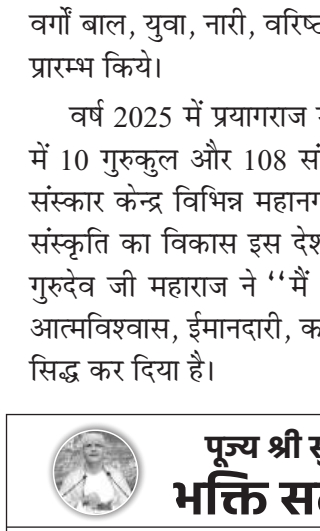

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित
भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2026

21 जून - अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

गुरुपूर्णिमा के देशव्यापी कार्यक्रम

27 से 28 जून - रायपुर, छत्तीसगढ़
27 जुलाई, सायं - सत्संग
28 जुलाई, प्रातः - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

29 जून - पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

04 से 05 जुलाई - पंचकुला, हरियाणा
04 जुलाई, सायं - सत्संग
05 जुलाई, प्रातः - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

11 जुलाई - न्यू मुम्बई, महाराष्ट्र गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग सायं - सत्संग

12 जुलाई - वरदान लोक आश्रम, थाणे-मुम्बई (महाराष्ट्र)
प्रातः - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

19 जुलाई - सिद्धिधाम आश्रम, कानपुर (उ.प्र.)
सायं 4.30 बजे से - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

29 जुलाई - मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव
आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
प्रातः 8 बजे से - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

04 अगस्त - युवा अभ्युदय, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली

10 से 13 दिसम्बर - शिव ध्यान योग शिविर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

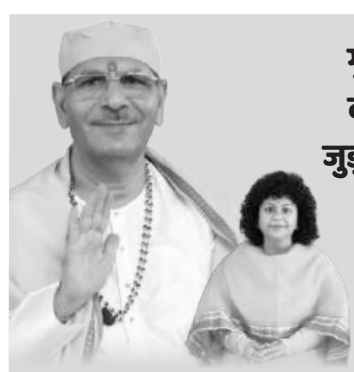

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DD NATIONAL
दूरदर्शन पर देखिये गीता ज्ञान अमृतम्
प्रतिदिन प्रातः 7:30 से
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

संस्कार
सोमवार से शुक्रवार
प्रतिदिन प्रातः 7:45 से 8:05 तक

Phone +91 99999 04747

www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

Jaago Sudhanshu Ji Maharaj

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय'

प्रभु! हमें असत्य से बचाकर सत्य की ओर ले चलो, अन्धेरों से प्रकाश की ओर ले चलो। जीवन के दो मार्ग हैं-एक श्रेय मार्ग और दूसरा प्रेय मार्ग। एक चमक-दमक से भरपूर प्रेय मार्ग है, जो देखने में बड़ा प्रिय लगता है, आकर्षण वाला मार्ग है, यह चकाचौंध वाला मार्ग तो जरूर है। किंतु यह नरक की ओर ले जाता है, दु:ख पीड़ाओं की ओर ले जाता है। इसके विपरीत जिसमें कोई आकर्षण नहीं है, दिखने में सीधा-सादा सा है, लेकिन कठिन भी है, वह मार्ग आगे चलकर कल्याणकारी मंगलमय सिद्ध होता है। जैसे-खाने-पीने में जो चीजें स्वादिष्ट लगती हैं, जरूरी नहीं वे स्वास्थ्यवर्धक भी हों। स्वादिष्ट लुभावने व्यंजन खाते समय तो चाहे अच्छे लगें लेकिन बाद में बीमारियां और दु:ख ही देते हैं, जबकि स्वास्थ्यवर्धक चीजें चाहे जीभ को स्वाद न दें लेकिन बाद में शुभ, कल्याणकारी ही होती हैं। इसलिए वही मार्ग चुनिए जो बाद में शुभ फलदायी होवे। उसे हम श्रेय मार्ग अर्थात् श्रेष्ठ मार्ग कहते हैं। यही मार्ग चयन करने योग्य है। ●

प्रिय आत्मन्!

इंसान जब दुनिया में जन्म लेता है तो किसी की शरण में पलता है, किसी की प्रेम की छाया में वह जीता है। किसी शक्ति के हाथों में वह सुरक्षित रहता है। जीवन की राहों में चलते-चलते जैसे-जैसे मार्ग ऊबड़-खाबड़,टेढ़े-मेढ़े और कांटों से भरा दिखाई देता है तब आदमी के मन में कहीं न कहीं डर, चिन्ता आने लगती है। उसे हर पल दु:खी रहने की आदत सी पड़ जाती है और तब महसूस होता है कि किसी सबल सहारे की हमें आवश्यकता है दुनिया में आदमी किसी के सहारे को ढूढ़ता है तो थोड़ी देर के लिये उसे सहारा मिलता है लेकिन वह कुछ ही क्षणों में छूट जाता है किसी का भरोसा करता है लेकिन भरोसा भी टूटता नज़र आता है, धन का सहारा लेता है तो वह भी थोड़ी देर तक ही साथ दे पाता है। वक्त विपरीत चला जाय या भाग्य की मार पड़ जाय, सारी दुनिया भी मुंह मोड़ लेती है लेकिन आखिर में इंसान को समझ में आता है कि सबकी शरण एक ही है। उस एक मात्र शरण देने वाले 'मालिक' के प्रति अगर हम नतमस्तक हैं तो किसी न किसी बहाने से, किसी न किसी को माध्यम बनाकर वह हमें सम्भालता है। उस दयालु कृपालु के पास, प्रेम का असीम भण्डार है, इसलिये दुनिया की तरफ न देखकर दुनिया के मालिक की तरफ आप चलिए। दुनिया को समझाने में समय बहुत लग जाता है फिर भी दुनिया मानती नहीं, लेकिन दुनिया के मालिक को मनाकर देखिए बिगड़ी हुई बात भी बन जाती है। भगवान करें आप सभी का उस मालिक से अटूट रिश्ता जुड़ जाये और उसकी कृपा सदैव सब पर बनी रहे।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

-आचार्य सुधांशु

श्रद्धा, समर्पण और साधना का पर्व - गुरुपूर्णिमा

साधुजन उस देश का, आया याही संसार।
दादू उससे पूछिए, प्रीतम के समाचार ॥

गुरु का जीवन में आना सौभाग्य है। उसी से लोक भी सुधरता है और परलोक भी। गुरु से जीवन में शांति, आनंद और सफलता का वरदान प्राप्त होता है। गुरु मिलन से, गुरु से प्राप्त बहाज्ञान से जब जागृति आती है, शिष्य बोल उठता है-

अजरोऽहम् शाश्वतोऽहम् नित्योहम्

मैं न मरने वाली, न मिटने वाली चेतना हूं, मैं शाश्वत हूं, मैं था, मैं हूं, मैं रहूंगा।

फिर निराशा में भी आस-विश्वास, दुर्बलता में शक्ति का संचार होने लगता है। जीवन में लक्ष्य दिखाई देने लगता है। समय, शक्ति और सामर्थ्य का सही दिशा में उपयोग होने लगता है।

जीवन को जानने का, लक्ष्य की ओर बढ़ने का, भटकाव से बचने का सही मार्गदर्शन पाने का अवसर है गुरु का दिव्य सत्संग। गुरु के महान प्रेरक विचारों से आपका अंत:करण झंकृत्त हो जायेगा।

स्वयं श्रीकृष्ण कहते हैं-**तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।**

उस परब्रह्म को जानने हेतु सद्गुरु की शरण ग्रहण करें। उन्हें दण्डवत प्रणाम करें। श्रद्धाभाव से जिज्ञासा करें, सद्गुरु की सेवा और कृपा प्राप्त करें।

धर्मग्रंथों में कहा गया है-शिष्य के आत्मज्ञान हेतु गुरु ही नेत्र है। गुरुदीप है, वह सूर्य चन्द्र की तरह प्रकाशमान करने वाला गुरु ही देव है, वही मार्ग है।

गुरु अपने शिष्य की चिंता करता है। वह उससे गहरा लगाव सत्रता है। उसे भटकने, अटकने से बचाता है। उसे अपनी कृपा का सुरक्षा चक्र प्रदान करता है।

हर रुह से अपनी रूह का सद्गुरु रिश्ता रखता है।
सात समुंदर पार भी शिष्य की चिंता रखता है।

इसलिए कहा जाता है-**गुरु है तो जिंदगी शुरु है।**

गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरुदर्शन, गुरु संदेश, गुरु उपदेश बड़ा ही पुण्यकारी माना जाता है। गुरु के प्रति जितनी गहरी श्रद्धा होगी परिणाम उत्तने ही ज्यादा चमत्कारी होंगे। सद्गुरु के प्रति अगर आपके हृदय में अगाध श्रद्धा है, तो आपके जीवन में सब कुछ सहजता से सुलभ हो जायेगा। श्रद्धा से आपको मान भी, सम्मान भी, समृद्धि भी, सुरक्षा भी, रोगों से मुक्ति भी और ईश्वर प्राप्ति भी हो जायेगी। जीवन में कितना भी बड़ा दुर्भाग्य चल रहा होगा, आपकी श्रद्धा उस दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित कर देगी। जहां श्रद्धा है, वहां सभी तरह की बरकत है। गुरुपूर्णिमा के समान पुण्यफल देने वाला अन्य कोई भी पर्व नहीं है, इस महापर्व पर शिष्यों के द्वारा गुरुकार्यों में दिया गया दान अनन्त फलदायी है। तन, मन, धन और जीवन को धन्य करने का विशेष पुण्यमय सुअवसर है गुरुपूर्णिमा।

श्री सद्गुरु दीदार कर तृप्त भये दोऊ नैन।
तन मन शीतल हो गया, पाया खोया चैन॥

29 जुलाई, 2026 को सद्गुरु के दर्शन कर तन-मन और जीवन को सफल बनाने का महान पर्व गुरुपूर्णिमा है। ऐसे अवसर का पुण्य लाभ अवश्य लें, गुरुपूर्णिमा पर गुरुदर्शन के लिए अवश्य पधारें।

क्योंकि सत्संग तुम्हारा रंग नहीं बदलता है।
तुम्हारे जीवन जीने के ढंग को बदल देता है॥

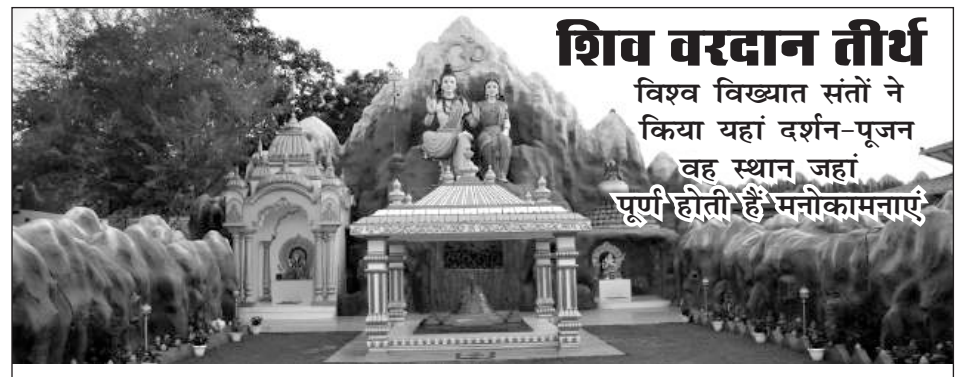

शिव वरदान तीर्थ

विश्व विख्यात संतों ने किया यहां दर्शन-पूजन वह स्थान जहां पूर्ण होती हैं मनोकामनाएं

आनन्दधाम आश्रम की ओंकार पर्वत की गुफा में 12 ज्योतिर्लिंगों में विद्यमान शिव की दिव्य उर्जा कष्ट हरण करती है। इन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन पूजन और रुद्राभिषेक से हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हुई हैं। देश-विदेश के भक्त यहाँ मनौती पूर्ण करने आते हैं। भारत के महान संतों ने भी यहाँ आकर दर्शन पूजन किया है और कृपा प्राप्त कर आनन्दित हुए हैं। पूज्य जगद्गुरु स्वामी राजराजेश्वराश्रम जी महाराज (हरिद्वार), विश्व प्रसिद्ध राम कथा वाचक पूज्य मोरारी बापू जी, चमत्कारी विद्या के धनी सनातन गौरव बागेश्वर सरकार पूज्य पंडित धीरेन्द्र शास्त्री जी तथा भारत भर के सैकड़ों साधु संन्यासी, संत एवं भक्तजन यहाँ की दिव्य ऊर्जा से लाभान्वित हुए।

शिव वरदान तीर्थ स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों में **वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग** का विशेष महत्व है। शिवपुराण के अनुसार शिवभक्त रावण शिव जी को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। कई वर्षों तक तपस्या करने के बाद भी जब भगवान शिव प्रकट नहीं हुए, तब रावण ने अपने एक-एक सिर को काटकर शिवलिंग पर अर्पित करना प्रारम्भ किया। नौ सिर अर्पित करने के पश्चात् जब वह अपना दसवां सिर काटने लगा, तब भगवान शिव प्रसन्न होकर प्रकट हो गये। भगवान शिव ने रावण के कटे हुए सिरों को पुन: जोड़ दिया और उसके घावों को ठीक किया। शिव जी ने 'वैद्य' की भांति रावण का उपचार किया, इसलिए वे वैद्यनाथ कहलाये। मान्यता है कि 'वैद्यनाथ' ज्योतिर्लिंग में सच्चे मन से की गई प्रार्थना अवश्य स्वीकार होती है। रोग, भय, मानसिक अशांति, ग्रहदोष तथा जीवन की बाधाओं से मुक्ति पाने के लिए 'वैद्यनाथ' भगवान की पूजा-प्रार्थना रुद्राभिषेक अत्यंत फल्दायी है। शास्त्रों में कहा गया है-'दर्शनात् पूजनाद् भक्त्या सर्वपापै: प्रमुच्यते' अर्थात् श्रद्धा से भगवान वैद्यनाथ के दर्शन-पूजन से मनुष्य सभी पापों से मुक्त हो जाता है। शिव वरदान तीर्थ स्थित वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन-पूजन और रुद्राभिषेक से सैकड़ों भक्तों ने रोग-शोक से मुक्ति पाकर अपने जीवन को नवऊर्जा से पूरित किया गया है। भक्तजन किसी भी असाध्य बीमारी से परेशान हैं तो एक बार शिव वरदान तीर्थ के वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन-पूजन कर भगवान शिव से स्वास्थ्य लाभ का वरदान पायें।

भगवान के सहारे द्वन्दमय संसार में निर्द्वन्द होकर रहें

इस संसार में पाना भी है, खोना भी है, लेना भी है, देना भी है, आना भी है, जाना भी है, मान भी है, अपमान भी है, सुख भी है दुख भी है, दिन भी है, रात भी है। प्रभु से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! यह दोनों स्थितियां जब भी सामने आएं तो जीवन में मधुरता, मिठास में कभी कमी न आए। हे मेरे प्रभु! मुझे यह आशीर्वाद दो चाहे जीवन का उत्थान देखूं या पतन देखूं, जवानी देखूं या बुढ़ापा देखूं, रोग शैय्या सामने हो या फिर बहुत बड़ा स्वास्थ्य बल हो पर मेरे माधुर्य में कोई कमी न आए। मिठास जीवन में बनी रहे। धन मिले या छिन जाए। धन मिल जाए तो इतना अकड़ न जाऊं कि दूसरों को दबाने लग जाऊं और छिन जाए तो रोने कल्पने न लगूं।

गुरुवर का जन्मोत्सव उल्लासपर्व ‘धर्म संस्कृति महोत्सव’ के रूप में सम्पन्न

परिवार, समाज व राष्ट्र के लिए प्राण समान है-धर्म और संस्कृति-सुधांशु जी महाराज

नई दिल्ली। विश्व जागृति मिशन द्वारा 2 मई, 2026 को पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज का जन्मोत्सव उल्लास पर्व **‘धर्म संस्कृति महोत्सव’** के रूप में आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश भर से बड़ी संख्या में भक्तगण अपने गुरुवर का जन्मदिन मनाने आश्रम पधारे। देश के विविध प्रांतों से संतगण, बुद्धिजीवी, समाज सेवक एवं राजनेता भी आनन्दधाम आश्रम आये। सभी पूज्य सदगुरुदेव महाराजश्री से मिले और अपनी शुभ मंगल कामनायें व्यक्त की। आश्रम में आयोजित प्रात:कालीन सत्र में भक्तों ने गुरुदर्शन के साथ भजन एवं गुरु संदेश का श्रवण किया। वहीं सायंकालीन सत्र में पूज्य गुरुदेव एवं डॉ. अर्चिका दीदी के सहित सभी मंचासीन संभ्रान्त अतिथियों के विचारों से भी भक्तों को अवगत होने का अवसर मिला। जिसमें कल्कि पीठाधीश्वर जगतगुरु श्री प्रमोद कृष्णम् महाराज, जगतगुरु स्वामी आचार्य सतीश जी महाराज धर्मपत्नी सहित, प्रतिष्ठित योग गुरु श्री लाल जी महाराज, केंद्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उईके जी एवं राष्ट्रीय महिला आयोग के निदेशक श्री राम अवतार जी आदि प्रमुख थे।

इसी क्रम में पीतवस्त्र में अपने शिक्षकों के संग हाथ में पोस्टर लिए गुरुकुल के बच्चों द्वारा दिया गया रोगमुक्त-संस्कारयुक्त जीवन का संदेश अत्यंत प्रेरक रहा। इसी प्रकार परीक्षित गढ़ से आई पारम्परिक वाद्यों से सजी टोली ने अपने वादन एवं नृत्य से सबका मन मोह लिया। इस तरह दिन भर अपनी गुरुसत्ता के प्रति मंगल शुभकामनायें प्रेषित करने वाले गुरु भक्तों का तांता लगा रहा। पूज्य महाराजश्री ने सबकी भावनाओं का ध्यान रखते हुए सभी को स्नेह आशीर्वाद प्रदान किया। इस प्रकार ‘धर्म संस्कृति महोत्सव’ के रूप में मनाये गये पूज्य महाराजश्री के 71वें जन्मोत्सव पर आनंदधाम आश्रम में दिनभर उल्लास का वातावरण रहा।

2 मई को प्रात:काल गुरुवर जब देव दर्शन के लिए निकले, तो बाहर उनके स्वागत-अभिनन्दन के लिए हजारों भक्त हाथों में पुष्प गुच्छ आदि के साथ खड़े दिखे। गुरुवर ने अपनी मुस्कानपूर्ण मुद्रा में सभी भक्तों का भाव-अभिवादन स्वीकार कर उन्हें अपना आशीर्वाद प्रदान किया। गुरुवर के आगे बढ़ते ही भक्तों का यह कारवां उनके साथ हो लिया। पूज्य सदगुरुदेव महाराजश्री ने आश्रम के देव मंदिरों में दर्शन-पूजन के बाद आश्रम में 14 अप्रैल से चल रहे साप्ताहिक धर्मानुष्ठान की पूर्णाहुति हेतु वैदिक यज्ञशाला में रखे गये यज्ञ में सहभागिता की, तत्पश्चात गुरुदर्शन, गुरु सत्संग, गुरुआरती के साथ भक्तों को आह्लादित करने वाला यह महोत्सव का प्रथम सत्र पूर्ण हुआ।

सायंकालीन सत्र में मुख्य सत्संग व्यास मंच से प्रेषित गुरुवाणी एवं विविध संतों आदि के संदेशों से भक्तों ने पूज्य महाराजश्री एवं उनके मिशन द्वारा सम्पन्न हो रहे परिवर्तन कारी कार्यों को आत्मसात किया। साथ ही करोड़ों भक्तों के जीवन को रूपांतरित करने में धर्म संस्कृति के आदर्शों, मर्यादाओं एवं परम्पराओं से अवगत हुए।

इस अवसर पर मंचासीन सदगुरु को सभी प्रतिष्ठित अतिथियों ने विशाल माला पहनाकर सम्मानित किया और अपनी शुभ मंगलकामनायें प्रेषित कीं। अतिथिगणों के साथ माल्यार्पण में सम्मिलित थी मिशन की उपाध्यक्षा ध्यान योग गुरु डॉ. अर्चिका दीदी जी, मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी, श्री राजकुमार अरोड़ा जी, श्री रवीन्द्र गांधी जी आदि। इस प्रकार शिव महाआरती के साथ गुरुवर का यह जन्मोत्सव पूर्ण हुआ और इस ‘धर्म संस्कृति महोत्सव’ ने धर्म, संस्कृति एवं संस्कार को जीवन एवं परिवार में आत्मसात करने की आवश्यकतायें समझा गया।

गुरुवर के जन्मोत्सव धर्म संस्कृति महोत्सव के अवसर पर भक्तों को सम्बोधित करते हुए डॉ. अर्चिका दीदी ने कहा–धरा के सम्पूर्ण आयामों का स्रोत होता गुरु। आप सबको इतने महान सदगुरु मिले हैं, जिसे जीवन का सर्वाधिक महान सौभाग्य कह सकते हैं। आप हर अवसर पर अपने सदगुरु व अपने माता पिता के प्रति सदैव धन्यवादी रहकर जीवन में आगे बढ़ें। दीदी ने कहा यदि जीवन को सुखद बनाये रखना है, तो गुरुमंत्र जप करने का संकल्प लें। गुरु समर्पण सहित गुरुमंत्र के नियमित जप से जीवन स्वत: महान होता चलेगा।

इस अवसर पर पूज्य गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज ने अपने संदेश में हजारों भक्तों को आशीर्वाद देते हुए कहा धर्म और संस्कृति किसी समाज, परिवार एवं व्यक्तित्व के लिए प्राण समान होती है। धर्म, संस्कृति और संस्कार जीवंत जागृत है, तो वह समाज भी ऊर्जावान बना रहेगा। इसलिए हमें अपनी संतानों सहित सम्पूर्ण नई पीढ़ी को धर्म-संस्कृति से जोड़ने का अभियान चलाना चाहिए। गुरुदेव ने कहा इसे एक दृष्टि से नारायण से जुड़ना भी कह सकते हैं। यदि भक्तों का हृदय नारायण से जुड़ा रहता है, तो जीवन में स्वत: सबकुछ पूरा होता रहता है, फिर किसी के सामने हाथ फैलाने की नौबत नहीं आती। पूज्य महाराजश्री ने अपने सत्संग यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम अपनी 20 वर्ष की आयु से भारत के ऋषियों का संदेश सरल-सहज भाषा में जन जन तक पहुंचाते आ रहे हैं। सदैव यही भाव रहा है कि उत्तर से दक्षिण, पूरब से पश्चिम चारों ओर बस ईश्वर का ही प्रकाश फैले। यही हमारी ऋषि परम्परा भी रही है।

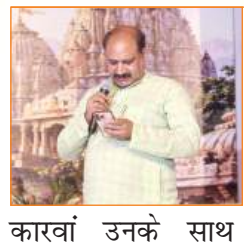

शेष भाग पृष्ठ 7 पर

महोत्सव में पधारे विशिष्ट अतिथियों की अभिव्यक्तियां

पूज्य श्री सुधांशु जी महाराजश्री विगत 50 वर्षों से निरंतर भारत के जन-जन का मार्ग प्रशस्त करने में लगे हैं। महाराजश्री धरा के ऐसे महामानव हैं, जो बोलते हैं, उसे जीते भी हैं।

–कल्कि पीठाधीश्वर जगद्गुरु आचार्य प्रमोद कृष्णम जी महाराज

पूज्यश्री सुधांशु जी महाराज द्वारा संस्कार परम्परा को लेकर भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में अभियान स्तर पर किया कार्य युगों युगों तक प्रेरणायें देता रहेगा। आप विद्या, वाणी, साधना के प्रदाता हैं, मैं हृदय से नमन करता हूं।

–जगद्गुरु स्वामी आचार्य सतीश जी महाराज

पूज्य महाराजश्री मानव एवं सनातन धर्म के विस्तारक हैं। मेरे अंदर किसी न किसी महापुरुष को देखने की ललक बनी ही रहती थी, पर पूज्य महाराजश्री से मिलकर वह ललक मेरी पूर्णता में बदल गयी।

–योग गुरु श्री लाल जी महाराज

गुरुसत्ता के साथ मिलकर सच्चे अर्थों में विचार मंथन करने का यह शुभ अवसर है। महाराजश्री जैसे धर्म सचेतक को बार-बार दंडवत नमन करता हूं।

–केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री दुर्गा दास उईके जी

पूज्य महाराजश्री अपने विचारों-सत्संगों से जनमानस को प्रेरित कर उन्हें प्रेम, शांति, सेवा से जोड़ रहे हैं। आपके निकट आकर व्यक्ति को संतोष, आत्मविश्वास मिलता है।

–राष्ट्रीय महिला आयोग के निदेशक श्री राम अवतार जी

भगवान राम जैसे दया के मूर्तिमान स्वरूप हैं हमारे गुरुवर

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये, जब तक घट में प्रान।।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि धर्म का, पुण्य का मूल आधार दया है, इसलिए मनुष्य को सभी के प्रति दया भाव रखना चाहिए, इससे धर्म फूलता-फलता है। अधर्म का, पाप का मूल आधार अहंकार, अकड़ है, इसलिए अहंकार से दूर रहना चाहिए और जब तक इस शरीर में सांस चल रही है, तब तक दया का दामन नहीं छोड़ना चाहिए।

भगवान राम दया के अवतार हैं उनकी दया केवल बाहरी व्यवहार तक सीमित नहीं थी। वे सदैव दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख मानते थे। जब भी किसी भक्त या प्राणी पर संकट आता, वे तुरंत उसकी सहायता के लिए तत्पर हो जाते यही कारण है कि उन्हें दया का सागर, दयानिधान कहा जाता है। भगवान राम का कोमल हृदय दया से ओत-प्रोत था। उनकी दया केवल अपने प्रियजनों तक सीमित नहीं थी, अपितु सभी के प्रति वे दयावान थे। जब अहिल्या श्राप के कारण वर्षों तक पत्थर बनी तपस्या कर रही थी, तब ऋषि विश्वामित्र के मुख से अहिल्या की करुण कथा सुनकर भगवान राम द्रवित हो गये और उन्होंने विश्वमित्र जी की आज्ञा से शिला से अपना चरण स्पर्श करा दिया। जैसे ही प्रभु श्रीराम के चरण उस शिला पर पड़े, अहिल्या का उद्धार हो गया। समाज ने जिसे तिरस्कृत कर दिया था, प्रभु श्रीराम के दया भाव ने उसे सम्मान देकर पुन: जीवन प्रदान किया। एक अन्य उदाहरण देखें जहां वन में रहने वाली वृद्ध शबरी शरीर से लाचार थी। वह कहीं आ जा नहीं सकती थी, लेकिन राम जी के दर्शन की अभिलाषा में वह जर्जर जीवन जी रही थी। जब राम जी को पता चला तो वे वृद्ध शबरी पर दया दृष्टि करने स्वयं उसकी कुटिया में पधारे। केवट, भक्त हनुमान, सुग्रीव, विभीषण आदि ऐसे अनेक उदाहरण है जहां भगवान राम का दया से भरा हृदय उन्हें अपनाने के लिए उमड़ पड़ा।

भगवान श्री राम की तरह हमारे गुरुवर 'दया' की प्रतिमूर्ति हैं। दीन-दुखियों का दु:ख देखकर गुरुवर के कोमल हृदय से दया का पावन प्रवाह बहने लगता है और वे हर संभव प्रयास करते हैं जिससे दुखी व्यक्ति का दर्द दूर होकर उसके जीवन में सुख व आनंद का झरना प्रवाहित होने लगे। गुरुवर के दयाभाव का ही परिणाम है कि स्थापना से लेकर अब तक विश्व जागृति मिशन देश-विदेश में अपने मण्डलों के माध्यम से सेवा-सहायता के अनेकानेक कार्य कर रहा है। अनाथ, गरीब बच्चों के लिए शिक्षा-संरक्षण हो या गरीब रोगियों की चिकित्सा हो या वृद्ध-असहाय जनों की सेवा हो मिशन के दया भरे हाथ हमेशा आगे बढ़कर हाथ थामने में लगे रहते हैं। गर्व की बात है कि अभी हाल ही में हरियाणा बोर्ड 10वीं की परीक्षा में मिशन द्वारा संचालित ज्ञानदीप विद्यालय की बालिकाओं ने शत प्रतिशत परिणाम लाकर मिशन परिवार व हरियाणा प्रदेश का देश में नाम रोशन किया है। यह वही गरीब घरों की बच्चियां हैं जो गुरुवर की दया दृष्टि पड़ने से पूर्व पढ़ना-लिखना तो दूर शहर में कूड़ा बीनकर गुजारा करती थीं और जब गुरुवर के आशीर्वाद से मिशन द्वारा उन्हें संरक्षण देकर ज्ञानदीप विद्यालय में अध्ययन के लिए प्रेरित किया गया तो आज उन्हीं गरीब घरों की बालिकाओं पर समाज और राष्ट्र को गर्व है।

मानवता के हित में तत्पर दया के सागर गुरुवर के चरणों में कृतज्ञता ज्ञापित करने का महापर्व है गुरुपूर्णिमा। गुरुवर के सान्निध्य में आनंदधाम आश्रम, नई दिल्ली में 25 से 29 जुलाई तक गुरुपूर्णिमा के अवसर पर ध्यान-सत्संग आदि का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस महापर्व पर आप सभी को सपरिवार, ईष्ट-मित्रों सहित सादर आमंत्रण है।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। टी.वी., सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से गुरुवर के ज्ञान को ग्रहण करें। सोशल मीडिया के विभिन्न चैनलों से जुड़ने के लिए धर्मदूत के पेज नम्बर-2 पर दिये गये सम्पर्क सूत्रों से जुड़ें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

बोर्ड परीक्षा में सौ प्रतिशत परिणाम के साथ

ज्ञानदीप विद्यालय ने रचा इतिहास

फरीदाबाद। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के आशीर्वाद से विश्व जागृति मिशन फरीदाबाद मंडल द्वारा संचालित श्री सनातन धर्म मंदिर परिसर में स्थित ज्ञानदीप विद्यालय ने हरियाणा बोर्ड की 10वीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में विद्यालय की सभी छात्राओं ने शत- प्रतिशत सफलता प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए मिशन का नाम रोशन किया है। यह परिणाम केवल शैक्षणिक सफलता नहीं, बल्कि नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी संदेश है। ऐसी बच्चियां जिन्हें समाज में संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, उन्हें शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाना मिशन का मुख्य ध्येय है। इस अभूतपूर्व सफलता पर ज्ञानदीप विद्यालय की छात्राओं को पूज्य महाराजश्री एवं श्रद्धेया दीदी जी ने मंगल आशीर्वाद दिया साथ ही मंडल के प्रधान श्री राजकुमार अरोड़ा जी, उपप्रधान श्री वी. के. सिंह जी, महामंत्री श्री प्रीतम नागपाल जी, और धर्माचार्य सुनील ढौंडियाल जी ने छात्राओं के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना की है।

छात्राओं की इस अभूतपूर्व सफलता में ज्ञानदीप विद्यालय की प्रिंसिपल श्रीमती सीमा अरोड़ा जी के कुशल नेतृत्व में सभी समर्पित शिक्षक-शिक्षिकाओं की सराहनीय भूमिका है। श्रद्धेया डॉ. अर्चिका दीदी जी के नारी सशक्तिकरण के संकल्प को इन बेटियों ने अपनी मेहनत से धरातल पर उतारा है। यह विश्व जागृति मिशन के लिए गर्व और गौरव की बात है जिनका भविष्य अंधकारमय हो सकता था। आज वे बेटियाँ सशक्त भारत की पहचान बन रही हैं। ●

भव्य शोभायात्रा के साथ लालसोट में

श्री महेश्वर महादेव शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

लालसोट। पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के आशीर्वाद से विश्व जागृति मिशन लालसोट मंडल द्वारा पपलाज माता रोड खारली इंदावा में आयोजित श्री महेश्वर महादेव शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ 12 मई, 2026, मंगलवार को भव्य कलश एवं शोभायात्रा के साथ हुआ। प्रथम दिवस पर पपलाज माता मंदिर व्यास हाउस से 351 कलशों की विशाल यात्रा विधिवत पूजा-अर्चना एवं बैंड-बाजों के साथ रवाना हुई। यात्रा का ग्रामीणों द्वारा जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। धार्मिक माहौल और भक्ति रस से सराबोर इस यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। यात्रा के समापन के बाद श्रद्धालुओं को भंडारा प्रसाद कराया गया। तीन दिन तक चले इस प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में पूजन-जाप और यज्ञ-अनुष्ठान के साथ शिव परिवार को मंदिर परिसर में स्थापित किया गया। इस अवसर पर मंडल प्रधान सर्वश्री महेश डोब, भगवान साहू, बनवारी अग्रवाल, गिर्राज माठा, अरविंद आर्य, बाबूलाल शर्मा, मुकेश रछोया, किशन गुप्ता, विनोद गर्ग, लल्लू जागा, हंसराज भींवाल, गिर्राज गुप्ता कालूवास, कमलेश शर्मा, रहे। कमलेश गुप्ता, विकास माठा, नंद किशोर शर्मा सहित मिशन के सदस्य एवं गणमान्य लोग मौजूद रहे। ●

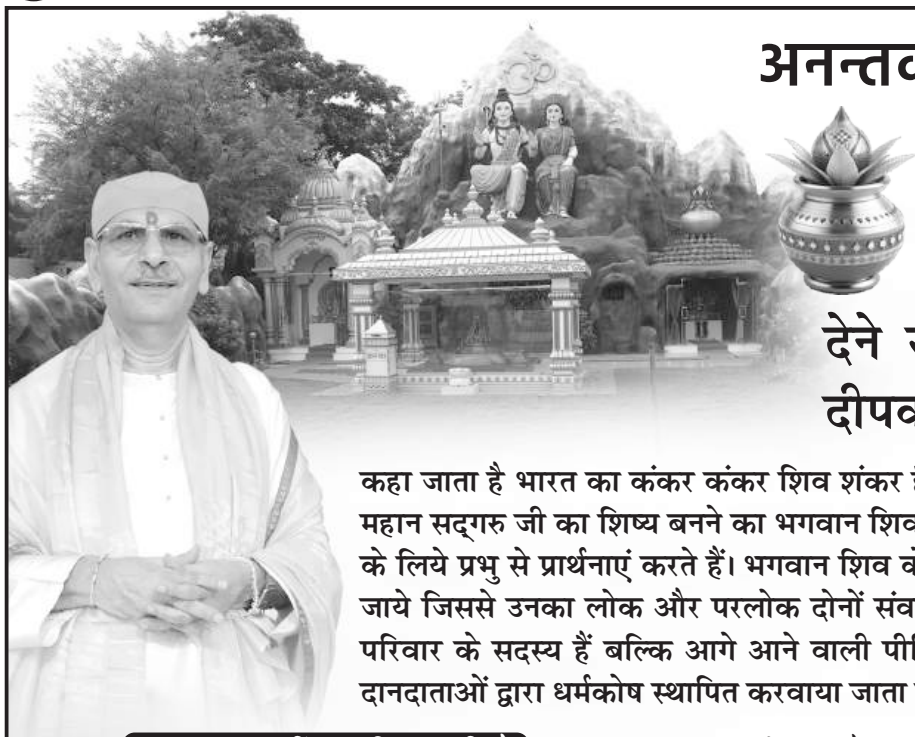

अनन्तकाल तक पुण्य का वरदान

धर्मकोष में करें एक बार दान

देने से धन न घटे, कह गये संत सुजान।
दीपक से दीपक जले, बढ़े सदा सम्मान।।

कहा जाता है भारत का कंकर कंकर शिव शंकर है। भगवान शिव ही हमारे पूज्य गुरुवर के ईष्ट आराध्य हैं। हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे महान सद्गुरु जी का शिष्य बनने का भगवान शिव ने सौभाग्य प्रदान किया जो स्वयं शिव के समान दयालु हैं और सदैव शिष्यों के कल्याण के लिये प्रभु से प्रार्थनाएं करते हैं। भगवान शिव के ध्यान में निमग्न गुरुवर जी के मन में विचार आया कि शिष्यों के लिये कुछ ऐसा किया जाये जिससे उनका लोक और परलोक दोनों संवर जायें। साथ ही उनके न केवल पिछली वंशावली में जो पूर्वज रहे हैं या वर्तमान में जो परिवार के सदस्य हैं बल्कि आगे आने वाली पीढ़ियों का भी कल्याण हो जाये। इसके लिए आनंदधाम आश्रम के शिव वरदान तीर्थ में दानदाताओं द्वारा धर्मकोष स्थापित करवाया जाता है।

धन घटता नहीं, समृद्धि बढ़ती है

सनातन संस्कृति में दान को अत्यंत पवित्र और पुण्यदायी माना गया है। दान केवल धन या वस्तु देने का नाम नहीं, अपितु यह हृदय की उदारता, करुणा और त्याग की भावना का प्रतीक है। दान सनातन धर्म का प्राण है। यह केवल वाह्य प्रक्रिया नहीं, अपितु आंतरिक साधना है। दान करने से व्यक्ति के हृदय का विस्तार होता है। जिससे समाज में प्रेम बढ़ता है और प्रभु की कृपा प्राप्त होती है। जब दान श्रद्धा, विनम्रता और निष्काम भाव से किया जाता है, तब वह साधारण कर्म न रहकर आध्यातिमक साधना बन जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य अनुसार दान अवश्य करना चाहिए। दान से धन घटता नहीं, अपितु पुण्य और सुख-शांति बढ़ती है तथा दान दाता की कीर्ति स्थिर दीपक की तरह समाज को प्रकाशित करती है। दान की वेद, पुराण, उपनिषद सभी प्रशंसा करते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है–**‘शतहस्त समाहर, सहस्त्रहस्त संकिर’** सौ हाथों से कमाओं और हजार हाथों से बांटो। अर्थात् धन कमाने का उद्देश्य केवल स्वार्थ नहीं अपितु परमार्थ है। तैतरीय उपनिषद् में गुरु शिष्य को उपदेश देता है–**‘श्रद्धया देयम्, अश्रद्धया अदेयम्’** अर्थात् श्रद्धा से दान करो, बिना श्रद्धा के नहीं। यहां भी दान की प्रधानता बताई गई है। स्कन्दपुराण में कहा गया है कि कलियुग में तप और यज्ञ कठिन हो सकते हैं परंतु दान हर व्यक्ति अपनी क्षमतानुसार कर सकता है। भक्तों द्वारा दिया गया दान अक्षय पुण्यदायी हो इसके लिए मिशन ने धर्मकोष की विशेष व्यवस्था की है।

धर्मकोष क्या और क्यों

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गईं विभिन्न सेवाओं के लिये दान करता है, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार एक से चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जाता है और उस राशि से प्राप्त ब्याज और अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित होती है। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उसका पुण्यलाभ न केवल स्वयं अजीवन पाओ बल्कि आने वाली पीढ़ियां भी उसका पुण्यलाभ प्राप्त करें।

इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे शिव वरदान तीर्थ प्रांगण में शुभ मुहूर्तों में स्थापित किया जाता है।

पुण्य प्राप्ति भी और संस्था के उपहार भी

● संस्था की गोल्डन बुक में दानदाता का नाम स्वर्णाक्षरों से अंकित किया जाता है। ● इस दान से पारिवारिक जनों की जन्मकुण्डली में ग्रहों की अनुकूलता बढ़ती है। ● दानदाता के घर-परिवार, नौकरी-व्यापार में उन्नति प्रगति के लिये गुरुकुल के ऋषिकुमार आश्रम में करते हैं नित्य प्रार्थना ● गणेश-लक्ष्मी महायज्ञ में पूजित एवं प्राण प्रतिष्ठित सुमेरु श्रीयंत्र उपहार स्वरूप भेंट किया जाता है। ● स्वर्णाक्षरों में अंकित वंशावली का शिव वरदान तीर्थ में द्वादश ज्योतिर्लिंग के सान्निध्य एवं सामीप्य ● जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या परिवार के अन्य शुभमंगल अवसर पर संस्था भेजती है पूज्य महाराजश्री का शुभकामना संदेश।

आइये! एक बार दान देकर अनन्तकाल तक पुण्य के लिए स्थापित अक्षय धर्मकोष में सहभागी बनें। ईश्वर और गुरु कृपा से सुख-सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त करें, अक्षय पुण्य के सुअवसर से जुड़ें। धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600, IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3,
Nazafgarh Road, Nangloi, New Delhi - 110041

यश-कीर्ति रूपी शरीर से अमर हो जाता है-दानदाता

यह मनुष्य शरीर परमात्मा की दी हुई महान देन है। एक उपहार है। परमात्मा संसार का सबसे बड़ा दाता-विधाता कहलाता है भगवान और इंसान का पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। हम सभी उस महान दाता-दयालु की संताने हैं। परमात्मा हमारी माता भी है और पिता भी है। उस दयालु ने बिना कुछ कीमत चुकाए हमें शरीर रूप में जन्म देकर जीवन निर्वाह के लिये सभी चीजें उपलब्ध कराई हैं। ईश्वर हमें हमेशा दे रहा है, उसके सदा देते रहने के कारण ही उन्हें देवी-देवता भी कहा जाता है। जब हम परमात्मा की संतानें हैं तो पिता के गुण-स्वभाव हम पर भी अवश्य आने चाहिये। दान देना एक महान और पुनीत कार्य है। दान देना एक प्रकार का परोपकार, त्याग और सेवा है। सेवा और सहयोग का प्रतीक है। असहाय, निर्धन, निर्बल को सहारा देकर उन्हें ऊंचा उठाने के लिए स्वार्थ से उठकर परमार्थ की भावना का परिचायक है दान।

हमारे देश में एक से बढ़कर एक दानी हुए। ऋषि दधीचि, महाराजा हरिश्चन्द्र, राजा रन्तिदेव, दानवीर कर्ण का नाम कौन नहीं जानता? इन महान जनों ने दूसरों की मदद के लिए स्वयं की परवाह नहीं की, युग बीत गए पर आज भी अपनी दानवीरता के कारण ये यश-कीर्ति रूपी शरीर से अमर हैं। यूं तो हर युग और काल में दान की महिमा महनीय रही है लेकिन कलियुग में तो दान को सबसे महत्व पूर्ण माना गया है। मनु स्मृति में महाराज मनु ने

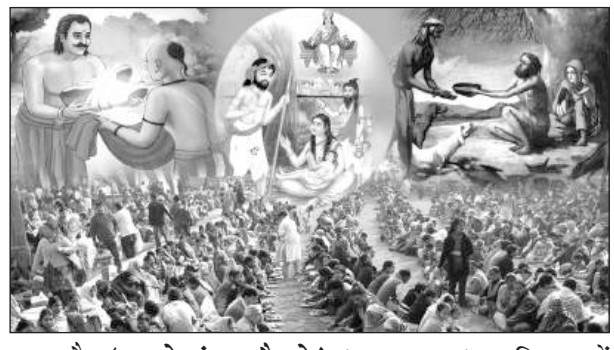

कहा है–**‘दानमेकं कलौयुगे’** (मनु. 1/86) कलियुग में दान ही प्रधान है। **दान धर्मात् परो धर्मो भूतानां नेह विद्यते।** दान धर्म से बढ़कर प्राणियों के लिए दूसरा कोई धर्म नहीं। मानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं–

प्रकट चार पग धर्म के कलि महं एक प्रधान।
येन केन विधि दीन्हें दान करे कल्यान।।

अर्थात् चार पैर में कलियुग में एक ही प्रधान है। जिस किसी भी प्रकार के दान देने से कल्याण होता ही है। भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, वस्त्रहीन को वस्त्र, रोगी को दवा, भयभीत को अभयदान, अज्ञान को ज्ञान देना यह सभी दान की श्रेणी में आते हैं। ऐसा करने से एक ओर जहां पाने वाले की जरूरत पूरी होने से उसे खुशी मिलती है वहीं देने वाले को आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होती है। सच मायने में देने के बाद मिलने वाला आनंद और संतुष्टि वर्णन से परे है। यदि आपने दान दिया तो उसे महसूस कर रहे होंगे और यदि ऐसा नहीं हो पाया तो कुछ दान करके देखिए, आपकी जिंदगी में खुशी का तूफान झूम उठेगा। हृदय में आनंद का सागर लहराने लगेगा।

अपने धन की शुद्धि के लिए हमें दान अवश्य करना चाहिए। दान से मतलब सिर्फ किसी को पैसे या वस्तुएं देना ही नहीं है बल्कि जो अभाव से ग्रस्त हैं या असहाय, बेसहारा हैं, उन्हें उस अवस्था से निकालना भी दान है। वो न केवल जीवनयापन कर सकें, अपितु धीरे-धीरे विकास की मुख्य धारा में सम्मिलत होकर समाज का उपयोगी अंग बन सकें। दान का अर्थ किसी को भिखारी बनाना नहीं बल्कि उसे दीन-हीन दशा से उठाकर कमाने लायक बना देना है। यही कार्य महाराजश्री के कृपा से मिशन कर रहा है। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है।

दान में दाता और पदार्थ महत्वपूर्ण नहीं होता अपितु दूसरों के कल्याण की भावना महत्व रखती है। मानस में तुलसी दास जी उस धन को धन्य कहते हैं जिसकी पहली गति होती है–'सो धन धन्य प्रथम गति जाकी। धन्य पुन्य रत मति सोई पाकी।।' भर्तृहरि जी ने नीति शतक में धन की तीन गति बताई हैं। दान-भोग-नाश जिसमें दान की गति उत्तम कही गयी है। ●

आसक्त नहीं, निर्लिप्त रहें

कमल के फूल की तरह तालाब के पानी में खिले रहने के लिए निर्लिप्तता जरूरी है। संसार में रहें, बसें, लेकिन संसार में फंसने से बचें, ऊपर उठे रहें। मन में न ज्यादा आसक्ति हो और न ज्यादा विरक्ति हो। मध्यम मार्गी होकर जीवन का आनंद लें। जैसे किसी चीज को हम पकड़ते हैं तो बड़ा अच्छा लगता है, लेकिन जब छोड़ना पड़ता है तब बड़ी कठिनाई होती है। ऐसा नहीं होना चाहिए, अगर किसी चीज को समय आने पर छोड़ना पड़े तो कठिनाई नहीं होनी चाहिए। मतलब हमारा मन ऐसा होना चाहिए कि जैसे आज ही कह दिया जाए कि आज ही सब कुछ छोड़ना है तो हम एकदम छोड़ने को तैयार हो जाएं। क्योंकि दुनिया में काम किसी के भी कभी पूरे नहीं होते और अगर कहा जाए कि भगवान अभी मैं जाना नहीं चाहता। पहले मेरे काम पूरे करवाइए, पहले मुझे पूरी तसल्ली होनी चाहिए, फिर मैं जाने के लिए तैयार होऊंगा। ऐसा कभी नहीं होता, मौत कभी किसी का इंतजार नहीं करती। किसी की भी बारी कभी भी आ सकती है। सारी की सारी चीजें यहीं रह जाती हैं, सारे के सारे कार्य - अधूरे रह जाते हैं, यह हम सभी जानते हैं।

जीवन के प्रवाह में बहते हुए हम कुछ ऐसे ही सोचते हैं, ऐसे ही जीते हैं कि जैसे हमें सदा यहीं रहना है, हमें कभी यहां से जाना ही नहीं, सबकुछ ऐसे ही चलता रहेगा। मनुष्य यह कहता भी है कि जब तक श्वास है, आस है, चाह है, तो राह भी है, कुछ-न-कुछ राह ऐसे ही बनती रहेगी। अभी तो मैं जिऊंगा, सबकुछ देखूंगा, अभी तो मुझे बहुत कुछ करना है, आगे बढ़ना है, ये बहुत सारी चीजें मनुष्य के अंदर लगातार चलती रहती हैं, कुछ हद तक यह ठीक भी है, लेकिन जिंदगी के पथ पर यह मानकर चलना चाहिए कि अगर छोड़ने के लिए कहा जाए तो चाहे कितनी भी प्यारी चीज हो या जीवन ही क्यों न हो बिना किसी कष्ट के एक पल में उसे छोड़ने को तैयार हो जाएं। ●

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं–
"VISHWA JAGRITI MISSION" का
A/c No. 916010029741912 Axis Bank,
East Punjabi Bagh, New Delhi-110026,
IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org याव्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

गौसेवा से भगवान श्री कृष्ण बने गोपाल और गोविन्द

सनातन धर्म में गाय केवल एक पशु नहीं अपितु धर्म, संस्कृति, समृद्धि और करुणा की प्रतीक है। हमारे वेद, पुराण, उपनिषद तथा धर्म ग्रन्थों में गौमाता की महिमा का अनेक स्थानों में वर्णन मिलता है। हमारे समाज में गौ सेवा को पुण्य और गौहत्या को महापाप माना गया है। गौसेवा करके ही भगवान श्री कृष्ण 'गोपाल' और 'गोविन्द' नाम से प्रसिद्ध हुए। वृंदावन और गोकुल की लीलाओं में भगवान श्री कृष्ण का गायों के प्रति विशेष प्रेम दिखाई देता है। इससे स्पष्ट होता है कि गौमाता का संबंध केवल धर्म से नहीं, अपितु भक्ति और आध्यात्मिकता से भी है। गौमाता मानव जीवन के लिए अनेक प्रकार से उपयोगी हैं गाय का दूध अत्यंत पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। इसमें प्रोटीन, कैल्शियम और अनेक पोषक तत्व पाये जाते हैं, जो शरीर को बल-ऊर्जा प्रदान करते हैं। बच्चों, वृद्धों और रोगियों के लिए गाय का दूध विशेष लाभकारी माना गया है। दूध से दही, मक्खन, घी, छाछ और पनीर जैसे पदार्थ बनते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए अमृत समान है। यज्ञ और हवन में गाय के घी के उपयोग एक ओर जहां वातावरण शुद्धि होती है वहीं दूसरी ओर सकारात्मक ऊर्जा भी उत्पन्न होती है। जो व्यक्ति श्रद्धा से गाय की सेवा करता है, उसे सुख-शांति और समृद्धि प्राप्त होती है। गाय को गौग्रास देना, उसकी रक्षा करना और उसका पालन करना धर्म कार्य माना गया है। ●

गुरुवर का जन्मोत्सव उल्लासपर्व 'धर्म संस्कृति महोत्सव' का शेष भाग

भण्डारे प्रसाद के साथ आनंदधाम आश्रम में 'धर्म संस्कृति महोत्सव' का यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में मिशन के महामंत्री जी के नेतृत्व में सभी पदाधिकारियों, सेवादारों और कार्यकर्त्ताओं की सराहनीय भमिका रही।

इस पावन महोत्सव के उपलक्ष्य में आनंदधाम आश्रम सहित देश-विदेश के विभिन्न मण्डलों द्वारा अपने स्थानीय क्षेत्रों, कस्बों व नगरों में धर्म संस्कृति जागरण प्रभात फेरियां निकाली गईं। सेवा शिविरों का आयोजन किया गया और गुरुवर के स्वस्थ-समुन्नत दीर्घ जीवन के लिए पूजा-पाठ, जप-यज्ञ-अनुष्ठान आयोजित किये गये। यहां पर प्रस्तुत हैं गुरुवर के जन्मोत्सव पर मण्डलों में आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां। ●

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि "विश्व जागृति मिशन-गौशाला" के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI
Accepted Here
भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

अहमदाबाद, गुजरात

गाजियाबाद

पूर्वी दिल्ली

युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र

घर परिवार, नौकरी व्यापार में उन्नति-प्रगति के लिए दु:ख, दरिद्रता को दूर कर सुख-समृद्धि प्राप्ति के लिए, रोग-बीमारी दूर कर आरोग्यता के लिए, घर के कलह-क्लेश को दूर कर आनन्द-मंगल प्राप्ति के लिए और जीवन में आने वाले अनेक प्रकार के शारीरिक व मानसिक कष्टों से छुटकारा पाने के लिए पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान, दान-पुण्य, धर्म कार्यों के लिए सम्पर्क करें।

आपकी हर समस्या का पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान से मिलेगा समाधान

स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए विशेष है निर्जला और योगिनी एकादशी व्रत

सभी व्रतों में एकादशी के व्रत को उत्तम माना जाता है और एकादशियों में निर्जला और योगिनी एकादशी के व्रत को विशेष महत्व दिया जाता है। निर्जला और योगिनी एकादशी के व्रत पूजन से भगवान विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है। एकादशी का व्रत पूरे विधि-विधान और सच्चे हृदय से करने से भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है। व्रती साधक पवित्रात्मा होकर जन्म-जन्मांतर के पाप-संताप से मुक्ति का वरदान प्राप्त कर लेता है और उसका लोक-परलोक सुधर जाता है। निर्जला और योगिनी एकादशी का व्रत सभी व्रतों में श्रेष्ठ और अश्वमेध यज्ञ करने के समान पुण्यफलदायी है। ●

मनोकामना पूर्ति के लिये करें ज्येष्ठ पूर्णिमा का व्रत-पूजन

प्रत्येक माह की पूर्णिमा का हमारे धर्म में विशेष महत्व है लेकिन ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा का स्नान दान विशेष महत्व रखता है। मान्यता है कि इस पूर्णिमा में गंगा स्नान के पश्चात् पूजा-अर्चना कर दान-दक्षिणा देने से सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण होती है। कुछ क्षेत्रों में ज्येष्ठ पूर्णिमा को वट पूर्णिमा व्रत के रूप में भी मनाया जाता है जो वट सावित्री व्रत के समान ही होता है। ज्येष्ठ पूर्णिमा को ही संत कबीर का जन्म हुआ इसलिये इस पूर्णिमा को कबीर जयंती भी मनायी जाती है। कबीरदास जी एक क्रांतिकारी संत, कुशल उपदेष्टा एवं समाज सुधारक थे। वह पढ़े-लिखे नहीं थे 'मसि कागज छुओ नहीं, कलम गही नहीं हाथ'। वे जो बोलते थे उनके शिष्य उसे लिपिबद्ध कर लेते थे। वे ईश्वर को एक मानते थे तथा उसे अपना माता-पिता, मित्र तथा पति के रूप में देखते थे। उनकी सरल भाषा आम आदमी के दिल में उतरती थी। वह सत्य, अहिंसा तथा सदाचार के पक्षधर थे। उनका सारा जीवन सत्य की खोज और असत्य के खंडन में बीता। गुरुपूर्णिमा के पूर्व आने वाली ज्येष्ठ पूर्णिमा में गुरुकृपा और जीवन में सर्वविध उन्नति-प्रगति के लिये पूर्णिमा का पूजन-अनुष्ठान अवश्य करना चाहिये।

प्रदोष व्रत के पूजन से गृहस्थ जीवन में आती है खुशहाली

भगवान शिव और माता पार्वती को प्रसन्न कर उनकी कृपा पाने के लिये हर महीने के दोनों पक्षों में आने वाले प्रदोष के व्रत, पूजन, जप, यज्ञ, दान का विशेष महत्व है। इससे भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष कृपा प्राप्त होती है। पुरुषोत्तम मास के प्रदोष व्रत का विशेष महत्व है। प्रदोष के व्रत, पूजन, पाठ, जप, यज्ञ से भगवान शिव अपने भक्तों को मन की शांति और हर मनोकामना पूरी करते हैं। इस पुण्य पर्व का लाभ भक्तों को जरूर उठाना चाहिये। इस प्रदोष व्रत के दिन भगवान शिव के साथ उनके परिवार की पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से घर-परिवार के कलह-क्लेश मिटते हैं और सुख-समृद्धि, प्रेम-प्रसन्नता का उदय होता है। इस पर्व पर शिव परिवार की पूजा शिवभक्तों को अवश्य करनी चाहिये। प्रदोष पर्व पर शिवचालीसा, शिव सहस्त्रनाम पाठ, रुद्राभिषेक, शिव पंचाक्षर मंत्र, महामृत्यंजय मंत्र जाप व पाठ स्वयं करने व सुयोग्य ब्राह्मणों से करवाने पर महापुण्य फल की प्राप्ति होती है। ●

आषाढ़ अमावस्या के स्नान-पूजन से पायें देव-पितृ कृपा

14 जुलाई, 2026 मंगलवार को आषाढ़ मास की देव-पितृकार्य अमावस्या है। आषाढ़ मास की अमावस्या देव व पितृ कार्यों के लिए विशेष पुण्यफलदायी होती है। इस अमावस्या पर स्नान-दान और देव-पितृ पूजन का विशेष महत्व है। मन को सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर बनाए रखने हेतु पवित्र नदियों में स्नान, तीर्थों की यात्रा, दान, सेवा-सहायता, यज्ञ, भजन, तप, साधु-सन्तों का संग, गुरु की शरण, धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय, माता-पिता का सम्मान, गरीबों पर दया एवं देव-पितरों का पूजन जैसे बहुत से साधन निर्देशित किए गए हैं। ज्योतिष के अनुसार पितृदोष, विषदोष, मंगली दोष, सन्तान हीनता, वैधव्य, दारिद्रय, धूर्त, कलह आदि भयंकर दोषों का कारण व्यक्ति के अपने अमर्यादित कर्म ही होते हैं, जिनसे मुक्ति प्राप्त करने के लिये धर्म का आचरण ही औषधि का कार्य करता है। धर्म का अनुसरण करने से पिछले दुष्कर्मों का प्रायश्चित होकर मन में पवित्रता का संचार होता है। ●

युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित आगामी पूजा-अनुष्ठान जिनमें आप अपनी इच्छानुसार भाग ले सकते हैं

17 जून, 2026	बुधवार	रम्भा तीज व्रत
20 जून, ''	शनिवार	अरण्यषष्ठी
23 जून, ''	मंगलवार	श्री महेश नवमी
24 जून, ''	बुधवार	श्री गंगा दशहरा
25 जून, ''	गुरुवार	निर्जला एकादशी
27 जून, ''	शनिवार	शनि प्रदोष
29 जून, ''	सोमवार	ज्येष्ठ पूर्णिमा
03 जुलाई, 2026	शुक्रवार	आषाढ़ चतुर्थी व्रत
10 जुलाई, ''	शुक्रवार	योगिनी एकादशी
12 जुलाई, ''	रविवार	प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि
14 जुलाई, ''	मंगलवार	आषाढ़ अमावस्या

सभी पर्व-त्योहारों पर पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान के लिए "युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र" में सम्पर्क करें।
सम्पर्क सूत्र : +91 9560792792,8826891955,7291986653,9599695505

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान